WK 09 • 060-305

01 MARCH FRIDAY

APPOINTMENTS

नेता के प्रकार (Types of Leader)

समाजशास्त्रियों एवं समाज मनोवैज्ञानिकों ने नेता के कई प्रकार बतलाये हैं। कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों द्वारा बतलाये गये नेता के प्रकार निम्नांकित हैं —

→ Kimball Young's का वर्गीकरण — किम्बल यंग ने नेतृत्व के निम्नांकित छः प्रकार बतलाये हैं —

→ **राजनैतिक नेता** — इस प्रकार के नेता अपने दल को संगठित करने एवं दल के कार्यों पर अपनी नियंत्रण बनाये रखते हैं। अन्य लोगों के विरोध के बाद भी ये अपने नेतृत्व को बनाये रखने का पूर्ण प्रयास करते हैं। ऐसे नेता राजनीतिक पार्टी से संबंधित होते हैं। ये सत्ता के इच्छुक रहते हैं और गुटबन्दी एवं संघर्ष के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं।

→ **प्रजातंत्रात्मक नेता (Democratic leader)** — इस तरह के नेता किसी भी तरह के नीति निर्माण, निर्णय एवं योजना का निर्धारण अपने सदस्यों के साथ विचार-विमर्श तथा मिल-जुलकर करते हैं। इन्हें अपने सदस्यों के भलाई एवं सुख-सुविधा का अधिक ख्याल होता है। ऐसे नेता अधिक सहनशील तथा आम सदस्यों के राय के अनुकूल चलने वाले होते हैं।

→ **नौकरशाही नेता (Bureaucrats)** — ऐसे नेता प्रशासन के संचालन में अपनी अहम् भूमिका निभाते हैं। ये निश्चित नियमों एवं निर्धारित कानूनों को मानने एवं पालन करने वाले होते हैं। ये सरकारी विभागों का कार्य कार्य-कुशलता पूर्वक करते हैं तथा उच्चाधिकारियों के आदेशों का अनुपालन करने वाले होते हैं। ये अधिकार प्रेमी होते हैं तथा उच्च अधिकारियों एवं राजनैतिक नेताओं की चापलूसी करना भी बखूबी जानते हैं।

→ **कूटनीतिज्ञ (Diplomat)** — कूटनीतिज्ञ सरकार के नीतियों एवं योजनाओं के अनुकूल एक प्रतिनिधि के रूप में किसी दूसरे देश या अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करते

NOTES

Scanned with CamScanner

हैं वे अपने देश एवं सरकार के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए शब्दों का प्रयोग बड़ी कुशलता एवं चतुराई से करते हैं।

→ सुधारक (Reformer) — ऐसे नेता आदर्शवादी नेता होते हैं। वे वर्तमान सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त दोषों को दूर करने के लिए भिन्न-भिन्न तरह से प्रयास करते हैं और एक आदर्श समाज के स्थापना की परिकल्पना बनाये रखते हैं। ऐसे नेता प्रायः व्यावहारिक कम तथा सैद्धान्तिक अधिक होते हैं। इनमें संवेगों की अधिकता एवं भावुकता अधिक होती है।

→ सिद्धान्तवादी (Theorist) — सिद्धान्तवादी नेताओं के विचारों एवं व्यवहारों में व्यावहारिकता की कमी होती है। वे अपने विचारों को सही ठहराने के लिए तर्क का सहारा लेते हैं। वे तर्क के माध्यम से ही अपने अनुयायियों को प्रभावित करते रहते हैं।

→ Lippitt and White's का वर्गीकरण — लिपिट एवं व्हाइट (1939) ने कर्ट लेविन के निर्देशन में नेतृत्व के निम्नांकित तीन प्रकार बतलाये हैं —

→ सत्तावादी नेतृत्व (Authoritarian Leadership) — सत्तावादी नेता अपने समूह का नेतृत्व अपने हाथ में रखता है। वह स्वयं ही समूह की नीतियों का निर्माण, समूह की योजनाओं को तैयार करना एवं क्रियान्वयन का कार्य भी स्वयं ही करता है। वह समूह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए दिशा तय करने का कार्य भी स्वयं ही करता है। वह सदस्यों की क्रियाओं एवं उनके संबंधों का निर्धारण भी स्वयं ही करता है। वह स्वयं निश्चय करता है कि किसी सदस्य को पुरस्कृत करना है और किसे दण्ड देना है। इस तरह से समूह के प्रत्येक सदस्य के भाग्य की कुंजी उसके हाथ में होती है। ऐसा नेता जान-बूझकर समूह की संरचना को इस तरह से बनाकर

NOTES

APPOINTMENTS

रखता है कि सदस्य आपस में कुछ विचार-विमर्श न कर सकें तथा समूह के भीतर एवं बाहर से आने या जाने वाली सभी सूचनायें उसी के माध्यम से होकर जायें। ऐसी समूह की समाजमितीय संरचना (sociometric structure) एक तारा के आकार का होता है।

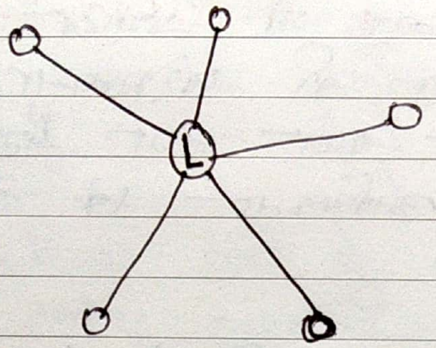

Star-shaped Structure

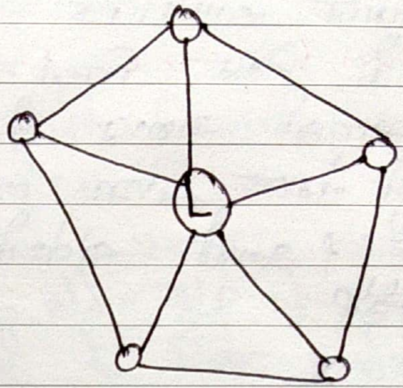

Net-shaped Structure.

लिपिट एवं व्हाइट के अनुसार सत्तावादी नेता कार्य-अभिमुखी (task-oriented) होते हैं। अर्थात् ये समूह सदस्यों के कल्याण की चिंता कम तथा सदस्यों द्वारा समूह लक्ष्य की प्राप्ति की दिशा में अधिकाधिक कार्य किये जाने पर बल डालते हैं। ऐसे समूहों में सदस्यों का मनोबल कमजोर होता है। फलतः समूह नेता के मृत्यु या लंबे समय तक अनुपस्थिति से प्रायः धीरे-धीरे कमजोर हो जाते हैं और टूट जाते हैं।

→ प्रजातन्त्रात्मक नेतृत्व (Democratic Leadership)—

प्रजातंत्रात्मक नेतृत्व में समूह के अधिकार एवं सत्ता का विकेन्द्रीकरण होता है। नेता तथा समूह सदस्यों के बीच स्नेहपूर्ण तथा सौहार्द्रपूर्ण संबंध होता है। इसकी समाजमितीय संरचना जाल के समान होती है। इसमें नेता समूह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए बनाये जाने वाले नीतियों एवं योजनाओं का निर्माण के लिए सभी समूह सदस्यों के साथ विचार-विमर्श कर एक निश्चित निर्णय पर पहुँचता है। वह समूह के कार्यों को सभी सदस्यों के बीच उनकी योग्यता एवं अभिरुचि के अनुसार

NOTES

Scanned with CamScanner

बैठ देता है तथा सदस्यों की भलाई के लिए हमेशा प्रयासरत रहता है। ऐसे नेतृत्व में समूह के सदस्यों का मनोबल ऊँचा होता है। फलतः नेता की मृत्यु या अनुपस्थिति में भी समूह का कार्य सुचारु रूप से चलता रहता है।

→ अहस्तक्षेपी नेतृत्व (Laissez-faire or Abdicratic Leadership) –
इस तरह के नेतृत्व में नेता अपने समूह के सदस्यों पर नाम मात्र का नियंत्रण रखता है। वह न तो सदस्यों का मार्गदर्शन करता है और न ही किसी तरह का निर्देश उन्हें देता है। सदस्यों को पूरी स्वतंत्रता होती है कि वे समूह लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कौन-सा कार्य करें तथा कौन-सा न करें। Reber (1985) ने कहा है कि "समाज मनोविज्ञान में अहस्तक्षेपी नेतृत्व उस तरह के नेतृत्व को कहा जाता है जो न्यूनतम नियंत्रण के साथ कार्य करता है। वास्तविक अहस्तक्षेपी दशा में नेता द्वारा किसी ढंग का नियंत्रण नहीं किया जाता है, यहाँ तक कि किसी प्रकार की सहायता या मार्गदर्शन भी नहीं किया जाता है।"

इस प्रकार समाज मनोविज्ञान में नेतृत्व के कई प्रकार बताये गये हैं। जिनमें प्रजातंत्रात्मक तथा सत्तावादी नेतृत्व अधिक लोकप्रिय है। जिनमें प्रजातंत्रात्मक नेतृत्व अधिक सामान्य नेतृत्व प्रकार है, क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में इसी ढंग का नेतृत्व देखने को मिलता है।

Scanned with CamScanner